इसमें जीवन की उत्पत्ति, स्थिति और लोप का ज्ञान
प्राप्त हुआ। उन्होंने यह जाना की निर्वाण, वेदना,
तृष्णा, उपादान, जन्म, जरा मरण, शोक और
दुःख का रहस्य क्या है। जिस पीपल के नीचे
उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी वह बोधि वृक्ष

कल्याण मार्ग

बुद्धत्व प्राप्त होने पर गौतम बुद्ध ने जो आयाम लिए और वहाँ उन्होंने प्रेम अहिंसा सिद्धान्तों के साथ अपना प्रभाव उपदेश दिया उन्होंने कहा — है भिक्षुओं इन दो अन्तों का भिक्षुओं को सेवन नहीं करना चाहिए एक तो कामवासनाओं में काम सुख लिप्त होना और दूसरा अपने को कष्ट पीड़ा दे शरीर को सन्तप्त करना। इन दोनों का परित्याग कर मैंने एक मध्यम मार्ग निकाला है— निर्वाण.

निर्वाण के कल्याणकारी परिणामों की व्याख्या करते हुए कहा — हे भिक्षुओं, बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, लोक पर दया करने के लिए, देवताओं और मनुष्यों प्रयोजनों के लिए, हित के लिए, सुख के लिए विचरण करो, आदि में कल्याण मध्य में कल्याण और अन्त में कल्याणकर होने वाले धर्म का उपदेश करो

——उसके बाद गौतम बुद्ध उठ बोले,
उत्तर भारत और मध्यदेश प्रदेश का उपदेश
का प्रचार करने के लिए गया। जिसमें 45 वर्षों
तक धर्म का प्रचार करते हुए अन्त में 484-83
ई० पू० में यह कहते हुए कहा कि निर्वाण प्राप्त
किया — आवश्यक मानते अनुकूल मानते, मैं [illegible]
की प्रकट जाता हूँ धर्म और सिद्धान्त [illegible]
गौतम बुद्ध भी महावीर की तरह
ब्राह्मण धर्म के विरोधी थे वे न तो वेदों की
प्रामाणिकता और अपौरुषेयता में विश्वास करते
थे और न ब्राह्मणों के धार्मिक आधिपत्य को
ही स्वीकार करते थे बुद्ध का मूल सिद्धान्त था
दुःखवादी संसार और जीवन के निरीक्षण और
अध्ययन से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि मानव
जीवन की विभीषिकाओं को बुद्ध ने चार सत्यों के
रूप में लिया — (i) यह जगत दुःखमय है (ii) [illegible]
दुःख दुःखमय है (iii) यह दुःख अनावश्यक [illegible]
बौद्ध संस्कृति के स्तम्भ बुद्ध के
चार सिद्धान्त हैं यह चार आर्यसत्यों

बुद्ध ने नैतिकता और मानवता प्रगति के कारण के रूप में प्रचार किया (i) दुःख को मानवीय कहकर उन्होंने सबको जागरूक करा, आदि और निवारण का मार्ग बताया (ii) दुःख समुदाय को मानवता कहकर उन्होंने उसको दूर्लभ उत्पन्न करने वाला कहा (iii) दुःख का नाश और (iv) दुःख के निवारण करने का मार्ग। अतः देखा जाए तो वेदों की सनातनीक सम्मानी संस्कृति ही बुद्ध के चतुर्विध आर्यसत्यों का अध्ययन करना दुःख दूर होने के लिए उन्होंने सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि - इन अष्टांगिक मार्ग का निर्देश किया